18 जनवरी, 1969

ज्योति-स्वरुप शिव के साकार माध्यम पिताश्री ब्रह्मा

स्मृति दिवस पर श्रद्धांजलि

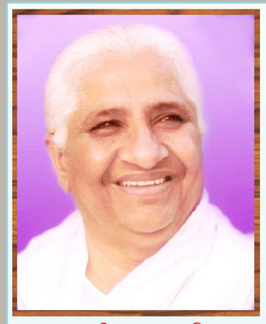

दादी प्रकाशमणि
पूर्व मुख्य प्रशासिका

18 जनवरी का अविस्मरणीय अनुभव

मीठे बाबा हमें सदैव बेहद सेवाओं में कभी कहाँ, कभी कहाँ भेजते ही रहे। अनेक सेन्टर खोलने के निमित्त बनाया। कभी दिल्ली तो कभी मुम्बई, कभी कोलकाता, तो कभी बिहार भेजते थे। विदेश में जापान आदि की भी अचानक यात्रा करायी। सदैव बाबा का यह वरदान था कि बच्ची, हर समय एवररेडी रहना। बाबा का एक इशारा आता था कि तुम्हें यहाँ से वहाँ जाना है। मैं कहती थी, जी बाबा। बाबा रोज बेहद सेवा की कुछ-न-कुछ प्रेरणा भी देते थे और आज्ञा भी करते थे। अठारह जनवरी से पहले मैं गामदेवी मुम्बई में रहती थी। थोड़े दिन पहले ही मुम्बई से बाबा के पास पार्टी लेकर आयी थी। पार्टी लेकर चली गयी। फिर और एक छोटी पार्टी लेकर दो दिन के बाद मधुबन आयी। उस समय दीदी इलाहाबाद के कुम्भ मेले में गयी थी। चौदह जनवरी मकर संक्रांति पर वहाँ मेला लगता है। उस समय विशेष अर्धकुंभ मेला था। जब मैं यहाँ (मधुबन) आयी तो बाबा ने कहा, बच्ची, तुम अभी आयी हो, दो-चार दिन रुक जाना। बाबा कभी भी मुझे दो दिन से ज्यादा नहीं रहने देते थे। कभी मैं कहती थी, बाबा, मैं चार-पाँच दिन रहूँगी, तो बाबा कहते थे, क्यों, कोई सेवा नहीं है क्या? क्यों यहाँ रहना है? नहीं, सेवा पर चले जाओ, बादल भरके जाओ और वहाँ बरसो। जब बाबा ने खुद कहा कि दो-चार दिन रह जाओ तो मैंने कहा, जी बाबा। मैं आयी थी 14 जनवरी को और जाना था 16 जनवरी को। बाबा ने कहा, बच्ची, पार्टी को जाने दो, दीदी भी नहीं है, थोड़े दिन रह जाओ। उस समय मधुबन की सारी कारोबार दीदी ही सम्भालती थी। बाबा हर बात में हम बच्चों को अनुभवी बनाते थे।

अठारह जनवरी की सुबह बाबा ने मुरली नहीं चलायी। सबेरे से ही बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यज्ञ के इतिहास में बाबा के तपस्वी जीवन में केवल यह एक ही दिन था जब बाबा ने प्रात: की मुरली नहीं चलायी थी परन्तु वे उस दिन सर्वोच्च स्थिति में स्थित थे। जब हमने डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा तो बाबा ने उसी मस्ती में कहा था कि ''बच्ची, डॉक्टर क्या करेगा, मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ।'' उस दिन बाबा ने कहा, लाओ, आज बच्चों को पत्र लिखूँ। बाबा के हाथ में थी वह लाल कलम, जिसके सुंदर अक्षर सभी के दिलों को खींच लेते थे। बाबा ने सभी पत्रों के उत्तर दिये। बाबा ने लिखा था, ''बच्चे, सदा एक मत होकर चलना है, एक की याद में रहना है और सदा शक्तियों को आगे रखना है तब ही सेवा में सफलता होगी।'' ये अंतिम पत्र कई बच्चों ने अपने दिल में छुपा कर रख लिये थे। कितनी सौभाग्यशाली थीं वे आत्माएं जिन्हें स्वयं सृष्टि रचयिता ब्रह्मा ने अपने हस्तों से पत्र लिखे थे। दिन में बाबा अंगुली पकड़कर मुझे मधुबन का आँगन घुमाते रहे। उस समय यह ट्रेनिंग सेंटर बन रहा था, बाबा में अंगुली पकड़कर दिखा रहे थे। दिन का भोजन कर बाबा ने विश्राम भी किया। शाम के समय कोई पार्टी आयी थी, बाबा उनसे भी मिले। फिर उस दिन बाबा ने कहा, आज रात का भोजन थोड़ा जल्दी कर देते हैं। उस दिन बाबा ने रात 7.30 पर भोजन किया। वैसे तो रोज 8.30 बजे भोजन करते थे। भोजन के बाद बाबा रात्रि क्लास में भी आये। क्लास में बाबा ने शिक्षाओं भरी मधुर मुरली सुनायी।

अच्छा बच्चे, विदाई

उस दिन बाबा आठ बजे ही क्लास में आये और साकार रुप के वे अंतिम महावाक्य तो दिल में समाने जैसे हैं। **बाबा ने कहा था -''बच्चे, सिमर सिमर सुख पाओ, कलह-क्लेश मिटें सब तन के, जीवनमुक्ति पाओ।'' ''बच्चे, निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोई। तुम्हें किसी की भी निन्दा नहीं करनी और किसी से वैर विरोध भी नहीं रखना।''**

इस प्रकार, याद की यात्रा पर बल देते हुए यज्ञपिता बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रुक गये और बोले, **''बच्चे, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनो।** जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण व सदा निर्विकारी है, सदा निराकार है, निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है।'' फिर उस अंतिम घड़ी के पूर्व बाबा के मुख से ये शब्द निकले, **''अच्छा बच्चे, विदाई।''** ये शब्द बाबा ने केवल

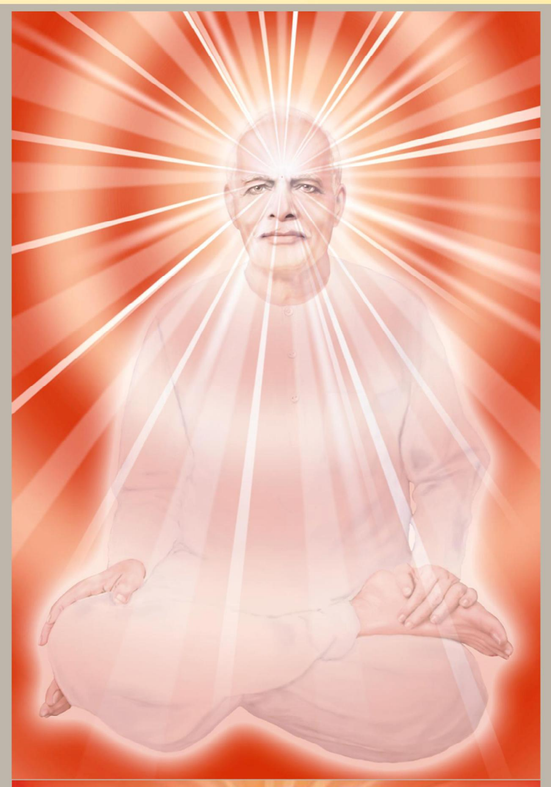

ब्रह्मा बाबा को प्रथम दिव्य साक्षात्कार मुम्बई के बाबुलनाथ मंदिर के सामने स्थित घर में ' विष्णु चतुर्भुज ' का हुआ था।

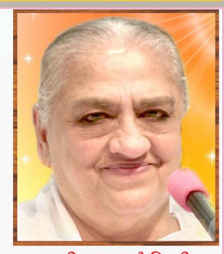

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा को हम सबने दिल से कहा कि बाबा, हमें आप जैसा बनना ही है। बनना ही है -यही आवाज है हम सभी की। बनेंगे, देखेंगे, सोचेंगे, पता नहीं बन सकेंगे या नहीं बन सकेंगे, ऐसा तो नहीं? जिसमें दृढ़ता है, वो बनेंगे जरुर, क्योंकि दृढ़ता सफलता की चाबी है। बाबा ने हम सबको ऐसी चाबी दी है, भले उसे जादू की चाबी कहो। अगर दृढ़ता है तो सफलता है ही।

साक्षात्कारमूर्त तब बनेंगे जब साक्षात् बाप समान बनेंगे। तो आप देखो, बाबा की सबसे पहली-पहली विशेषता क्या रही? ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने टच किया और ब्रह्मा बाबा ने उस संकल्प में थोड़ा भी संशय नहीं लाया। क्या होगा, कैसे होगा, मैं सब कुछ छोड़ तो दूं लेकिन आगे स्थापना कर सकूँगा या नहीं कर सकूँगा? नयी बात थी ना! दुनिया में द्वापर से लेकर अभी कलियुग तक जो बात किसी ने नहीं कही थी कि प्रवृत्ति में रहकर भी आप निर्विकारी रह सकते हैं, पवित्र रह सकते हैं। अभी तक भी इतने साधु, सन्त, महात्मा, मंडलेश्वर जो भी हैं, वे भी विश्वास नहीं करते हैं कि आग और कपास साथ में हों और आग नहीं लगे। ये हो ही नहीं सकता - वे ये शब्द बोलते हैं, लेकिन बाबा के प्रवृत्ति में रहने वाले बच्चे बोलते हैं कि आग और कपास साथ हैं तो भी अपवित्रता की आग नहीं नहीं लग सकती। शुरू-शुरू में सिंध-हैदराबाद में माताओं-बहनों के पवित्रता अपनाने के कारण बहुत विघ्न पड़े। बाबा को पंचायत में बुलाया गया। पंचों ने बाबा से कहा कि आप इन माताओं और कन्याओं से कहो कि पवित्र न रहें। हमारे आगे आप वायदा करो। बाबा ने कहा कि मैं यह वायदा नहीं कर सकता और इन्हें भी कह नहीं सकता क्योंकि शिव बाबा ने मुझे यही आज्ञा दी है कि तुमको पवित्र बनकर, पवित्र दुनिया की स्थापना करनी है। इस ईश्वरीय ज्ञान का फाउण्डेशन ही यही है और मैं कहूँ कि पवित्र नहीं बनो तो पवित्र दुनिया स्थापन होगी कैसे? मैं यह नहीं कह सकता हूँ। मुझे शिव बाबा का डायरेक्शन है, मैं उसको टाल नहीं सकता। ऐसा निश्चय है! इतनी हिम्मत चाहिए ना!

बाबा को जरा भी संशय नहीं आया। बाबा इतना बड़ा जवाहरी था। जब सबकुछ यज्ञ में समर्पित कर दिया तो कभी सोचा कि मेरे परिवार का क्या होगा? मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा? मेरा इतना बड़ा परिवार है, सब-कुछ समर्पण कर दिया तो वे भूखे तो नहीं मरेंगे! ऐसा कुछ भी नहीं सोचा। उनमें यही लगन थी कि बाबा जो कहता है मुझे वैसा ही करना है। इसको कहा जाता है निश्चय। आपके आगे एग्जाम्पल है। आज इतना बड़ा पवित्र प्रवृत्ति वाला ब्राह्मण परिवार है। लेकिन उस समय ब्रह्मा बाबा अकेला था, उनके आगे कोई दृष्टांत, एग्जाम्पल नहीं था। नयी बात थी। इतनी नयी बात कि लोग असम्भव मानते थे। उस असम्भव को बाबा ने सम्भव बनाकर दिखाया। **संकल्प मात्र में भी, स्वप्न मात्र में भी बाबा को संशय नहीं आया। इसको कहते हैं बाप समान। बाप समान बनना माना साक्षात् बाबा बनना। तभी हम साक्षात्कारमूर्त बन सकते हैं।**

ब्रह्मा बाप समान बनने के लिए पहला फाउण्डेशन है निश्चयबुद्धि। अपने आपसे पूछो, हम बाप समान निश्चयबुद्धि हैं? सिर्फ बाबा में निश्चय नहीं। बाबा से हमारा प्यार बहुत है। बाबा के लिए हम कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। बाबा कुछ भी कहें, हम कर लेंगे। लेकिन बाबा कहते हैं कि कोई भी चीज अगर हिलती है तो आप चारों तरफ से बिल्कुल टाइट करेंगे ताकि हिले नहीं। हिलेगी नहीं तो टूटेगी नहीं। इसी रीति से बाप समान बनना है तो आपको भी चारों तरफ का निश्चय चाहिए। बाबा पर, स्वयं पर, ड्रामा पर और ब्राह्मण परिवार में निश्चय पक्का हो। निश्चय के आधार पर ही विजय माला का मणका बनेंगे।

दादी चन्द्रमणि

ब्रह्मा बाबा का लौकिक नाम दादा लेखराज था, वो हीरे-जवाहरात का धंधा करने वाले, पक्के पुजारी और अति भक्ति करने वाले थे, उन्होने अनेक गुरु भी किये थे। उन्हें विचार आया कि मैं तपस्या करूं। व्यापार के झूठे धंधे में क्यों फँसूँ? उनको बेहद का वैराग्य अंदर में पैदा हुआ। पहले-पहले उन्होने अपने मन को समझाया। मन को एक बच्चे के रुप में देखा। उन्होने सोचा, यह मन तो यहाँ-वहाँ घूम रहा है कभी पोजिशन में, कभी सम्बन्धों में, कभी दुनिया के कई प्रकार के वैभवों में। उन्होने शुरु से ही अपने मन को समझाने की कोशिश की। हे मन! तू कहाँ जा रहा है? मन से रुहरिहान की। हे मेरे मन, तू कहाँ भटक रहा है? देह में जा रहे हो? यह देह तुमको सुख नहीं दे रही है, दु:ख दे रही है। देह का धर्म दुख देने वाला है। शुरू-शुरू में बाबा ने एकान्त में मन से ऐसे कई प्रकार की बातें करना शुरू कीं। बनारस में एक बहुत बड़ा पेड़ था, उसके नीचे बैठ उन्होने एकांत में तपस्या की। जब समय आता है बदलने का, तो संकल्प भी बदलने के ही चलते हैं। बाबा ने अपने लिए बुद्धि और स्मृति की शक्ति से धरनी बनायी। बुद्धि और स्मृति कहाँ-कहाँ जाती है, नोट किया। शिव बाबा ने उनको साक्षात्कार की लिफ्ट दी जिससे उनको दिखाया कि तू मेरा एक ही सिकिलधा बच्चा है और तेरे को ही यह आसुरी वृत्ति वाली दुनिया बदलनी होगी। मैं तेरे साथ हूँ। इसलिए शुरुआत में ही बाबा को साक्षात्कार हुए कि कौन-सा समय चल रहा है और क्या करना है, क्या नहीं करना है। इस पुरानी दुनिया का विनाश कैसे होना है, वो दृश्य बाबा ने साक्षात्कार द्वारा देखा। स्थापना नये स्वर्णिम विश्व की कैसे होनी है, उसका भी बाबा ने साक्षात्कार किया।

तपस्या का आधार आत्मानुभूति है - शिव बाबा ने पहले-पहले तपस्या का फाउण्डेशन डाला। ब्रह्मा बाबा ने आत्मिक वृत्ति व आत्मिक दृष्टि का विशेष अनुभव किया। मैं शरीर नहीं हूँ, मैं एक ज्योतिर्बिन्दु हूँ। लाइट हूँ, माइट हूँ। वो लाइट और माइट ऊपर जा रही है। धीरे-धीरे जब उनको आत्मा की अनुभूति हुई तो उन्होने सभी सम्बन्धियों व मित्रों को भी उसी रुप से देखना व बात करना आरंभ कर दिया।

सूक्ष्मवतन का साक्षात्कार - कई बार मैंने बाबा को जमीन से आसमान तक के स्वरुप में देखा और अपने को भी एक लाइट के आकार में देखा। ऐसे महसूस करती हूँ कि यह मुझे सूक्ष्म वतन का साक्षात्कार हुआ। बाबा के प्रति मेरा इतना अपनापन का सम्बन्ध जुट गया कि बाबा ही अपनी माँ है, पिता है और सब कुछ है। उस समय हमें शिव बाबा की प्रवेशता का ज्ञान नहीं था पर ब्रह्मा बाबा के प्रति एक अलौकिक आकर्षण था। उनकी अव्यक्त स्थिति और रुहानियत ने हमको खींचा। लौकिक परिवार के साथ हमने बाबा को कभी भी देह के सम्बन्ध में नहीं देखा। चाहे बाबा की युगल थी, चाहे बाबा का बहू थी, चाहे बाबा के बच्चे थे, उनसे भी बाबा ऐसे ही बात करता था जैसे कल्याण अर्थ हमसे करता था इसलिए बाबा का घर ऐसा लगा ही नहीं कि यह कोई गृहस्थी का घर है। वो हमें शुरु से ईश्वरीय परिवार दिखाई दिया।

गहन शांति का अनुभव - बाबा जब ओम की ध्वनि करते थे तो हम डीप साइलेन्स में चले जाते थे। हमारे अंदर कोई छोटा-मोटा पुराना संस्कार था भी तो वह उस साइलेन्स के गहन अनुभव से बहुत जल्दी समाप्त हो गया। फिर निश्चय हो गया कि जो बाबा श्रीमत दे रहे हैं, उसी पर चलना है। जब मैं छोटी थी तो स्वतंत्र विचारों की थी, अपने विचारों का महत्व रखती थी कि जो कहूँ वही हो। पर यहाँ जब बाबा की श्रेष्ठ मत को प्यार से समझा तो मैंने मनमत को ईश्वरीय मत से बदल दिया। दृढ़ निश्चय किया कि चलेंगी तो ईश्वरीय मत पर ही चलेंगी, ईश्वरीय मत ही सबसे श्रेष्ठ है। कितने भी विघ्न आएं, मुझे ईश्वरीय गुणों और शक्तियों को धारण करना ही है।

''ओम'' शब्द सर्वत्र - बाबा हमको सदा ओम शब्द से बुलाते थे जैसे ओम रामा, ओम मोती आदि और हम कहते थे, ओम बाबा, ओम राधे। ओम माना पहले आत्मा का परिचय आ जाता था। ओम माना मैं पवित्र आत्मा। बाबा हमेशा कहता था, आत्मा की स्मृति से एक-दो को बुलाओ और आत्मा की स्मृति से ही बातचीत करो। ''जशोदा निवास'' बाबा की बिल्डिंग का नाम था। यह बाबा की युगल के नाम पर था। ओम शब्द लगाने से उसका नाम ओम मण्डली पड़ गया। दूसरी बिल्डिंग जो हॉस्टल थी, उसका नाम ''ॐ निवास '' इसलिए पड़ा क्योंकि बिजली का एक बहुत बड़ा 'ॐ ' बिल्डिंग के ऊपर लगाया गया था जो सारे शहर में दिखाई देता था। बड़े अर्थ से इन दोनों भवनों के नाम रखे गये थे।

ब्रह्मा बाबा को जब ईश्वरीय साक्षात्कार हुए थे और उन्होने जवाहरात के बिजनेस से अवकाश प्राप्त किया था, तब 'विश्वकिशोर' जी जो ब्रह्मा बाबा के लौकिक बड़े भाई के लड़के थे, उनके मन में भी यह संकल्प था कि 'मैं भी बाबा का अनुकरण करूंगा।' उन्होने बाबा से अपनी इच्छा प्रगट भी की थी। परन्तु बाबा ने उन्हें निर्देश दिया था कि अभी थोड़ा ठहरो, आपको भी पूर्णरूपेण प्रभु-अर्पण होने की राय दे दी जायेगी। विश्वकिशोर जी तो हर हाल में राजी थे, जैसे बाबा उन्हें चलाये वैसे ही चलने में उनको खुशी होती थी। कुछ वर्षों बाद उन्हें इस ईश्वरीय ज्ञान यज्ञ में समर्पण होने की प्रेरणा मिली और तब वे सपरिवार इस ईश्वरीय यज्ञ में सर्वस्व समर्पित हो गये थे।

पाँच दिन का एक्स्ट्रा जीवन दिया बाबा ने - आपरेशन कराने के लिए मुम्बई जाने के लिए दादा विश्वकिशोर जब ब्रह्मा बाबा से विदाई ले रहे थे तब एक अनोखी बात हुई। ब्रह्मा बाबा ऐसे तो फोटो खींचने की स्वीकृति नहीं देते थे परन्तु उस दिन विदाई के समय ब्रह्मा बाबा ने भ्राता चन्द्रहास को बुलाया और फोटो लेने को कहा। ब्रह्मा बाबा खुद टैक्सी के सामने खड़े हो गये और एक तरफ दादा विश्वकिशोर व ब्र.कु.रमेश शाह थे। जब ट्रेन में बैठे तो ब्र.कु.रमेश ने दादा विश्वकिशोर से सवाल पूछा कि बाबा तो हमेशा अपना फोटो निकालने के लिए मना करते हैं, आज कैसे बाबा ने खुद चन्द्रहास जी को नींद से उठाकर फोटो निकलवाए? तब दादा विश्वकिशोर ने उन्हें एक गूढ़ रहस्य बताया कि मेरी यह ब्रह्मा बाबा से अंतिम मुलाकात थी। मैं ने बाबा को अर्जी दी थी कि अभी ईश्वरीय सेवा में बहुत पढ़े-लिखे भाई आ गये हैं तो मैं समझता हूँ कि अब मेरा कार्य समाप्त हो गया है, इसलिए मैं एडवांस पार्टी में जाकर बाबा के भविष्य के कारोबार को संभालना चाहता हूँ। बाबा ने तथास्तु कहकर मेरी इस अर्जी को स्वीकार किया। इस आपरेशन के बाद मैं उठूंगा नहीं इसलिए मेरी इस अंतिम विदाई का फोटो स्मरण चिन्ह के रुप में रखने के लिए बाबा ने अपना नियम तोड़ा। बाद में आपरेशन हुआ और दादा विश्वकिशोर ने देहत्याग किया। बाद में हमने मधुबन फोन किया और ब्रह्मा बाबा को उनके शरीर छोड़ने का समाचार देकर उनकी देह आबू लाने की आज्ञा मांगी तब मोहजीत ब्रह्मा बाबा ने कहा कि बच्चे, अभी उस आत्मा का शरीर के साथ जो सम्बन्ध था, वह तो खत्म हो गया है, अभी एडवांस पार्टी में नया पार्ट शुरु होगा, इसलिए शरीर को आबू लाने की जरुरत नहीं है, मुम्बई में ही अंतिम संस्कार कर दो। बच्चा अच्छा था, आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार था। बाबा ने ड्रामा कहकर सेकण्ड में बात समाप्त कर दी और एकदम नष्टोमोहा बन गये।

तेरह दिन बाद जब मुम्बई से उनकी युगल दादी संतरी मधुबन बाबा के पास आई तो विश्वकिशोर दादा के अंतिम समय के (शव के) फोटो ले आई और ब्रह्मा बाबा को दिखाना चाहती थी परन्तु बाबा से ऐसी विदेही अवस्था का अनुभव हो रहा था जो उनकी फोटो दिखाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। फिर बाबा ने ही उनसे पूछा , बच्ची, ये फोटो क्यों निकाले? क्या करोगी? क्या मधुबन के बच्चों ने विश्वकिशोर को नहीं देखा? फिर उनके शव को देखकर क्या करेंगे? अब इन फोटो को यहीं समाप्त कर दो। जितना पैसा इनमें खर्च किया, व्यर्थ गया। बच्ची, तुम जानती हो, बाबा देह से प्यार नहीं करते। आत्मा से बाबा का प्यार है। बाबा जानता है कि वह बच्चा कैसा था, वह क्या कमाई करके गया और भविष्य में क्या पद पायेगा। इसलिए ये फोटो आदि देखना सब छोटे बच्चों का काम है। बाबा के इस प्रकार के बोल सुनकर अंदर में एक प्रेरणा आई कि बाबा कितना नष्टोमोहा हैं! बाबा का न लौकिक में मोह, न अलौकिक में मोह। उस समय अव्यक्त अवस्था में बैठ ब्रह्मा बाबा ने उन्हें दृष्टि देकर अशरीरी अवस्था का अनुभव कराया।

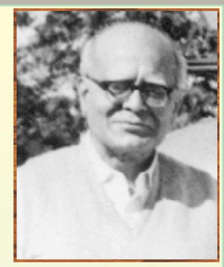

दादा विश्वकिशोर